International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. – 5, June – 2022, Special Issues
2022

धूमिल विरचित लंबी कविता 'पटकथा': स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग की साहित्यिक अभिव्यक्ति

डॉ. मलकीयत सिंह
सहायक प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धर्मशाला, जिला कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

पटकथा :– कविता धूमिल के बहुचर्चित कविता संसद से सड़क तक में प्रकाशित सबसे लंबी कविता है यह कविता समस्त भारत का दस्तावेज है। 'पटकथा' धूमिल के सातवें दशक के काव्य – साधना की चरम परिणति है। यह उनके सातवें दशक की कविताओं का शीर्ष बिंदु है।[1] यह भारत की आजादी से प्रारंभ हो कर सातवें दशक तक के भारत की दशा का अंकन करती है। भारत के राजनीतिक आर्थिक घटित हुआ, और जो हो रहा है उस का बेलौस चित्रण धूमिल ने किया है।[2]

पटकथा आत्मपरक ढंग से शुरू होती है। अपनी सुविधाओं को प्रयोग कवि कविता में व होता है। सच्चाई बयान करने में साहस करता है। फिर आजादी के उत्साह का वर्णन है कवि कहता है इस तरह जो था उसे मन जी भरकर प्यार किया और जो नहीं था उसका इंतजार किया।

मैंने इंतजार किया
अब कोई बच्चा
भूखा रहकर स्कूल नहीं जायेगा
अब कोई छत बारिश में नहीं टपकेगी।
अब कोई आदमी कपड़ों की लाचारी में अपना नंगा चेहरा नहीं पहनेगा
अब कोई दवा के अभाव में घुट–घुटकर नहीं मरेगा
अब कोई किसी की रोटा नहीं छीनेगा
कोई किसी को नंगा नहीं करेगा अब यह जमीन अपनी है आसमान अपना है'[3]

और उसके बाद मोहभंग का वणन मैं सुनता रहा
सुनता रहा– सुनता रहा मतदान होते रहे है। लेकिन यह उत्साह मौन संशय था मौन खुशफहमी थी :

मैं अपनी सकमोहित बुद्धि के नीचे उसी लोकनायक को बार–बार चुनता रहा
जिसके पास हर शंका और हर सवाल का एक ही जवाब था
या कि कोट के बटन–होल में महकता हुआ एक फूल गुलाब का।'[4]

लोगों ने सकमोहित बुदधि के नीचे हर एक समस्या का समाधान जननायक को मान लिया था और बिना किसी योजनाओं के देश में समस्याओं ने सिर उठाना शुरू कर दिया था। आजादी का उत्साह उस वक्त ठंडा हो गया जब चीनी आक्रमण ने पोल खोल दी और तमाम शांति योजनाएँ विफल हुई। धूमिल कहते हैं

भीड़ बढ़ती रहा
चौराहे चौड़े होते रहे
लोग अपने–अपने हिस्से का अनाज खाकर–निरापद भाव से
बच्चे जनते रहे। योजनाय चलती रहीं
बंदूक के कारखाने में
जूते बनते रहे।
बंदूक के कारखाने में
जूते बनते रहे।'[5]

अब देश का मतलब यहाँ नफरत, साजिश और अंधेरा रह गया था '' धूमिल को जनता की उदासीनता पर भी क्रोध आता है :

यह मेरा देश है
हिमालय से लेकर हिंद फैला हुआ महासागर तक
जला हुई मिट्टी का ढेर है
जहाँ हर तीसरा जुबान का मतलब– नफरत है।
साजिश है। अंधेर है। यह मेरा देश है
और यह मेरे देश की जनता है जनता क्या है?
एक शब्द सिर्फ एक शब्द है: कुहरा, कीचड़ और कांच से बना हुआ३
एक भेड़ है
जो दूसरों की ठंड के लिये
अपनी पीठ पर
ऊन की फसल ढो रहा है।'[6]

तत्पश्चात् कवि भारतीय जनता की असलियत पर से पर्दा उठाता है। जिसकी बोली को राजनीतिज्ञ ही समझ सकते हैं

ऐसा जनतंत्र है जिसमें
घोड़े और घास को
एक–जैसी छूट है
कैसी विडकबना है
कैसा झूठ है
दरअसल, अपने यहाँ जनता एक ऐसा तमाशा है जिसकी जान
मदारी की भाषा है।'[7]

लेकिन यह पूण मोहभंग की स्थिति नहीं कवि को अभी भी बदलाव की आशा है। तभी पाकिस्तान का आक्रमण झेलना पड़ता है। यदयपि यह वक्त संगठित होने का था और लोगों ने इस में अपनी दृढ़ता दिखाई थी। देश प्रेम का नारा फिर बुलंद हुआ है। लेकिन यह देश प्रेम नहीं। धूमिल कहते है :

इसे साहस मत कहो
दरअसल यह पुट्ठे तक चोट खायी हुई
गाय की घृणा थी।'[8]

फिर तत्कालीन प्रधान मंत्री शास्त्री जी की मृत्यु के बाद कवि अकाल, महंगाई, भ्रष्ट्राचार, कुव्यवस्था का नंगा नाच देखता है। कवि कहता हैः

मगर फिर मैं वहां चला गया अपने जुनन के अंधेरे में फू हड़ इरादे के हाथ छला गया वहाँ बंजर मैदान कंकाल की नुमाइश कर रहे थे गोदाम अनाज से भरे पड़े थे और लोग भूख मर रहे थे।''[9]

लोग भाईचारे को भुलाकर आत्मीयता का दर्शन कर के प्यार और सहानुभूति के नाम पर एक दूसरे को लूट रहे है। कोई भी वस्तु, रास्ता अपने सही स्थान पर नहीं है। यहाँ भारत का मानवीकरण किया गया है जो थका, हारा, निराश, हताश पागलों की हँसी हँसता हुआ कवि से कहता है कि उसे इस स्थिति को बदलना होगा

मेरा यकीन करो इस दलदल से बाहर निकलो
सुनो ! तुम चाहे जिसे चुनो मगर इसे नहीं
इसे बदलो ''[10]

वह जनता को अकमर्णयता त्याग कर अपनी तटस्थता की नीति को तिलांजला देकर अपनी ऊब को आकार देने का आव्हान करता है सत्ता साजिशों का बयान करते हुए कहता हैः

देश और धर्म और नैतिकता की
दूहाई देकर कुछ लोगों की सुविधा
दूसरें के 'हाय' पर सकते है
वे जिसकी पीठ ठोकते है
उसकी रीढ़ की हड्डी गायब हो जाती है''[11]

जनता को अपनी सुविधाओं के लिए सत्ता से डर और समझौता करने के प्रति आगाह करता है और उनकी क्रांतिकारिता को खरीद लिए जाने के प्रति भी सचेत करता है वह कहता हैः

सुनो!
आज मैं तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ जिसके आगे हर सच्चाई
छोटी है।
इस दुनिया में भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क रोटी है।
मगर तुम्हारी भूख और भाषा में
यदि सही दशा नहीं है
तो तुम अपने–आपको आदमी मत कहो क्योंकि पशुता –
सिर्फ पूँछ होने की मजबूरी नहीं है''[12]

यहाँ कवि की आत्मपरकता बनी रहती है। हिंदुस्तान के उदबोधन के बाद कवि आत्ममनिरीक्षण करता हुआ इस निर्णय पर पहुँचता है और व्यंग्यात्मक शैली में कहता है कि –

यद्यपि यह सही है कि मैं
कोई ठंडा आदमी नहीं हूँ
मुझ में भी आग है
मगर वह
भभक कर बाहर नहीं आती
क्योंकि उस के चारों तरफ काटता हुआ
एक 'पूंजीवादी' दिमाग है।
वह पूंजीवादी दिमाग परिवर्तन तो चाहता है, मगर शालीनता से।''[13]

अर्थात् जहां बिना कुछ किए अपनी बात सिदध हो जाए। यहां पर कभी ना बड़े हा सटाक शब्द में जनता की उस कायरता का चित्रण किया है जो अपने स्वाथों की सिदधि हेतु सत्ता से भय खाती है या डर जाती है और शांति की मशाल बुझ जाती है या आंदोलन चक्र चूक जाते है–

कुछ इस तरह कि चीजों की शालीनता बनी रहे।
कुछ इस तरह कि काँख भी ढकी रहे और विरोध में उठे हुये हाथ को
मुट्ठी भी तनी रहे और यहा है कि बात फैलने की हद तक आते–आते अटक जाती है क्योंकि हर बार
चंद सुविधाओं के लालच के सामने अभियोग की भाषा चूक जाती है।''[14]

संभवतः यही वह जड़ है जिस के कारण अभियोग की भाषा चूक जाती है।

कवि फिर आम चुनाव की प्रकिया से गुजरता है। नारी तथा वायदों का 'दादर शोर' एक बार फिर से मुखर हो उठता है। चुनाव पद्धति से उस का विश्वास उठने लगता है। यथा की अतिशयता में वह भारत का सत्ता कार एक विशाल अधमरे पशु के प्रेम करता है जिस की नाभि में एक सड़ा हुआ घाव है जिस में भयानक बदबू तथा मवाद बह रहा है ।''[15]

इस लोकतांत्रिक प्रणाली में मोहरे बने लोग को लक्ष्य करता हुआ कहता है क्योंकि बुरे और बुरे के बीच से किसी हद तक' कम से कम बुरे को चुनते हुए न उन्हें मलाल है, न भय है। न लाज है''[16]

यहाँ कवि ईमानदारी को अपनी चोर जेब भरते हुए देखता है। फिर कवि का साक्षात्कार घायल हिंद लेकिन वह निराश नहीं है उसे अपने अपमानित होने का मलाल नही है। कवि कहता हैः

मगर समय गवाह है कि मेरी बेचैनी के आगे भी राह है।' [17]

वह अपनी चिंता छोड़ कर जनता की चिंता का आह्वान करता है तुम मेरा चिंता न करो। धूमिल

जनता की ताकत और उनके जड़ता से भलीभांति परिचित थे उन्होंने कई स्थान पर जनता को अपनी जड़ता प्रयोग कर अपनी ताकत के सही इस्तेमाल और गलत हाथ में पड़कर दुरूपयोग होने की प्रति सचेत किया –

उनके साथ चलो।
इस से पहले कि वे गलत हाथ के हथियार हों''18

लेकिन कवि भी उसी व्यवस्था का शिकार हो जाता है। उसका स्वप्र टूटता है सरकारें बदली है लेकिन कही कोई फर्क नहीं है। हाँ थोड़ा बहुत बदलाव जरूर हुआ है –

हाँ यह सही है कि इन दिनों /
मंत्री जब जनता के सामने आता है /
तो पहले से ज्यादा मुस्कुराता है –
नये – नये वादे करता है।''[19]

इस सरकार से भी कोई बदलाव नहीं आता। समस्याएँ वैसी की वैसी है–

हाँ यह सही है कि कुर्सियाँ वही हैं
सिर्फ टोपियाँ बदल गयी हैं।''[20]

अवसरवाद और दलबदल की राजनीति जोर पर है। कवि का स्वपन खत्म हो जाता है। संसद से अपेक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं ,

अपने यहाँ संसद –
तेला की वह घानी है
जिस में आधा तेल है और आधा पानी है ''[21]

इस कारण भारतीय जात को टटोलता हुआ कवि यह पता है कि हर तरफ पर भ्रष्ट्राचार पांव पसार चुका है जनता अपने अधिकार के प्रति सचेत नही रही है नेता उसकी भीड़ का लाभ उठाने में सिद्ध हस्त हो चुके है और जिस उत्साह से आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी आजादी के बाद व्यवस्था ठंडा पड़ता हुआ दिखाई देता है और इसका बड़ा कारण जागरूकता की कमी है जनता अधिकार के प्रति सचेत नहीं है और राजनीति सेवा भाव से बदलकर स्वार्थ की हो गई है स्वतंत्रता की खुशी से प्रारंभ हुई है कविता गुस्से और खीझ में समाप्त होती है –

मेरे सामने वहा चिरपरिचित अंधकार है ।
संशय की अनिश्चित ठंडी मुद्राएँ हैं।
हर तरफ शब्दवेधी सन्नाटा है
दरिद्र की व्यथा की तरह उचाट और कूंथता हुआ।
घृणा में डूबा हुआ सारा का सारा देश पहले की तरह आज भी मेरा कारागार है।''[22]

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नंदकिशोर नवल, समकालान काव्य यात्रा, पृ 0 262
2. चमन लाल गुप्ता, दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में धूमिल , पृ 0 27 3.
3. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 0 104 4 . वहा , पृ 0 101 5. वहा , पृ 0 105
4. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 0 107
5. वहा, पृ 0 108 7.वहा, पृ 0 111
6. वहा, पृ ० 114
7. धूमिल, संसद से सड़क तक , पृ 0 115
8. वहा, पृष्ठ 115
9. वहा, पृष्ठ 117।
10. वहा, पृष्ठ 118 5.
11. वहा, पृष्ठ 119
12. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ 0 115
13. वहा, पृष्ठ 117
14. वहा, पृष्ठ 119
15. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृष्ठ 120
16. वहा, पृष्ठ 121
17. वहा, पृष्ठ 124
18. वहा, पृष्ठ 127
19. वहा पृष्ठ 128।